# अनुक्रमणिका

# अनुक्रमणिका

**प्रथम अध्याय - ''सुमित्रानंद पंत और रामगोपाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व** **पृ. 1 - 35**

**1.1 सुमित्रानंदन पंतजी का व्यक्तित्व**

1.1.1 जन्म

1.1.2 बचपन

1.1.3 माता-पिता

1.1.4 पारिवारिक जीवन

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 स्वभाव

1.1.7 पुरस्कार

**1.2 सुमित्रानंद पंत का कृतित्व**

1.2.1 छायावादी रचनाएँ

1.2.1.1 वीणा

1.2.1.2 ग्रंथि

1.2.1.3 पल्लव

1.2.1.4 गुंज्जन

1.2.2 प्रगतिवादी रचनाएँ

1.2.2.1 युगांत

1.2.2.2 युगवाणी

1.2.2.3 ग्राम्या

1.2.3 नवचेतनावादी काव्य

1.2.3.1 स्वर्णकिरण

1.2.3.2 स्वर्णधूलि

1.2.3.3 उत्तरा

1.2.3.4 रजतशिखर

1.2.3.5 शिल्पी

1.2.3.6 सोवर्ण

1.2.3.7 अतिमा

1.2.3.8 वाणी

1.2.3.9 कला और बूढ़ा चाँद

1.2.3.10 लोकायतन

1.2.4 विकासवादी रचनाएँ

1.2.5 गद्य साहित्य

1.2.6 नाट्यकृति : ज्योत्सना

1.2.7 उपन्यास

1.2.7.1 हार

1.2.8 पाँच कहानी

1.2.9 आत्मसंस्मरण

1.2.10 निबंध साहित्य

1.2.11 आलोचना

**1.3 रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' का व्यक्तित्व**

1.3.1 जन्म

1.3.2 बचपन

1.3.3 माता-पिता

1.3.4 पारिवारिक जीवन

1.3.5 शिक्षा

1.3.6 स्वभाव

1.3.7 नौकरी तथा सेवाकार्य

1.3.8 पुरस्कार

1.3.9 यात्राएँ

BABASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

**1.4 कृतित्व**

1.4.1 काव्यरचना

1.4.1.1 सारथी

1.4.1.2 दुर्वासा

1.4.1.3 विश्व-ज्योति बापू

1.4.1.4 संघर्षों के राही

1.4.1.5 उत्सर्ग

1.4.1.6 हिमप्रिया

1.4.1.7 वीरांगणा

1.4.1.8 जलती रहे मशाल

1.4.1.9 जयघोष

1.4.1.10 गौरवगान

1.4.1.11 सर्वोदय के गीत

1.4.1.12 जले शौर्य का दीप

1.4.2 अध्यात्मिक प्रेमपरक गीत

1.4.2.1 मधुरजनी

1.4.2.2 रूपगंधा

1.4.3 नई कविता

1.4.3.1 आयाम

1.4.3.2 अहं मेरा गेय

1.4.3.3 साक्षी है सुर्य

1.4.3.4 यह तुम्हारा गाँव है

1.4.3.5 बंजर होता इतिहास

1.4.3.6 पृथ्वीराज

1.4.5 आस्था का सुर्य

1.4.6 शोध और आलोचना

1.4.7 कथा साहित्य

1.4.8 उपन्यास

1.4.8.1 राह और रोशनी

1.4.8.2 बदलती रेखाएँ

1.4.9 नाटक

1.4.9.1 धरती का देवता

1.4.9.2 सदानीरा

1.4.9.3 कुणाल

1.4.9.4 लोक देवता जागा

1.4.10 निबंध संग्रह

1.4.11 अन्य रचनाएँ

निष्कर्ष

**द्वितीय अध्याय - '''मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' का अनुशीलन''** **पृ. 36 - 79**

**2.1 तुलनात्मक अध्ययन 'अर्थ'**

2.1.1 तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता

2.1.2 तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व

2.1.3 तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य

2.1.4 तुलनात्मक अध्ययन की पद्धतियाँ

**2.2 'मुक्तियज्ञ' का कलापक्ष**

2.2.1 कथावस्तु

2.2.1.1 नमक आंदोलन

2.2.1.2 सत्याग्रह आंदोलन तथा बहिष्कार आंदोलन

2.2.1.3 पूर्ण स्वतंत्रता की माँग

2.2.1.4 द्वितीय विश्वयुद्ध

2.2.1.5 स्वतंत्रता प्राप्ति और सांप्रदायिकता की आग

2.2.2 चरित्र-चित्रण एवं पात्र परिचय

2.2.3 संवाद तथा भाषा शैली

2.2.4 देश काल वातावरण (प्रकृति चित्रण)

2.2.5 उद्देश्य

2.2.6 रस

**2.3 'मुक्तियज्ञ' का शिल्प पक्ष**

2.3.1 अलंकार

2.3.2 प्रतीक योजना

2.3.3 बिंब

2.3.4 छंद

**2.4 विश्व-ज्योति बापू का कलापक्ष**

2.4.1 कथावस्तु

2.4.1.1 खंडकाव्य

2.4.1.2 खंडकाव्य के तत्व

2.4.1.3 प्रथम सर्ग

2.4.1.4 द्वितयी सर्ग

2.4.1.5 तृतीय सर्ग

2.4.1.6 चतुर्थ सर्ग

2.4.1.7 पंचम सर्ग

2.4.1.8 षष्ठ सर्ग

2.4.1.9 सप्तम सर्ग

2.4.2 चरित्र-चित्रण एवं पात्र-परिचय

2.4.2.1 बापू का चरित्र-चित्रण

2.4.2.1.1 बालक के रूप में

2.4.2.1.2 अध्ययन में रुची

2.4.2.1.3 भावूक मन के बापूजी

2.4.2.1.4 पितृ-मातृ भक्त बापूजी

2.4.2.1.5 आदर्श पति

2.4.2.2 कस्तुरबा गांधी

2.4.2.2.1 नश्वरवादी कस्तुरबा

2.4.2.2.2 सहधर्मचारिणी कस्तुरबा

2.4.2.3 पुतली बाई का चरित्र-चित्रण

2.4.3 संवाद तथा भाषा-शैली

2.4.3.1 संवाद

2.4.3.2 भाषा-शैली

2.4.4 देश काल वातावरण (प्रकृति चित्रण)

2.4.5 उद्देश्य

2.4.6 रस

2.4.7 'विश्व-ज्योति बापू' का शिल्प-पक्ष

2.4.7.1 अलंकार

2.4.7.2 प्रतीक

2.4.7.3 बिंब

2.4.7.3.1 प्राकृतिक बिंब

2.4.7.3.2 भावात्मक बिंब

2.4.7.3.3 ऐतिहासिक बिंब

2.4.7.3.4 वैज्ञानिक बिंब

2.4.7.3.5 स्मृती बिंब

2.4.7.3.6 छंद

**निष्कर्ष**

**तृतीय अध्याय - '' 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' में मानव जीवन का लक्ष्य** **पृ. 80 - 114**

**3.1 'मुक्तियज्ञ' में मानव जीवन का लक्ष्य**

3.1.1 सांप्रदायिक एकता

3.1.2 सत्य-अहिंसा

3.1.2.1 सत्य

3.1.2.2 अहिंसा

3.1.3 मानवता

3.1.3.1 वर्ग-संघर्ष

3.1.3.2 वर्णभेद

3.1.4 अस्पृश्यता निवारण

3.1.5 देश-प्रेम

3.1.6 निस्वार्थ सेवा

3.1.7 विश्व-कल्याण की भावना

3.1.8 भारत के प्रति समर्पण

**3.2 'विश्व-ज्योति बापू' में मानव-जीवन का लक्ष्य**

3.2.1 सांप्रदायिक एकता

3.2.2 सत्य-अहिंसा

3.2.2.1 सत्य

3.2.2.2 अहिंसा

3.2.3 मानवता

3.2.3.1 वर्ग-संघर्ष

3.2.3.2 वर्णभेद

3.2.4 अस्पृश्यता निवारण

3.2.5 देश-प्रेम

3.2.6 निस्वार्थ सेवा

3.2.7 माता-पिता वात्सल्य

3.2.8 आदर्श दांपत्य जीवन

3.2.9 विश्व कल्याण की भावना

3.2.10 भारत के प्रति समर्पण भाव

**निष्कर्ष**

**चतुर्थ अध्याय - '' 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' में नायक की चारित्रिक विशेषताएँ'' पृ. 115-141**

**4.1 'मुक्तियज्ञ' की चारित्रिक विशेषताएँ**

4.1.1 आजादी के प्रेरक

4.1.2 अहिंसावादी बापू

4.1.3 संयमी

4.1.4 सत्यवादी

4.1.5 दलित पीडित जनता के रक्षक

4.1.6 वर्णभेद के विरोधक

4.1.7 अध्ययन शीलता

4.1.8 अथक कार्यशीलता

4.1.9 संस्कृति के रक्षक

4.1.10 आदर्शवादी

**4.2 'विश्व-ज्योति बापू' की नायक की चारित्रिक विशेषताएँ**

4.2.1 आजादी के प्रेरक

4.2.2 अहिंसावादी बापू

4.2.3 संयमी

4.2.3.1 अपरिग्रह

4.2.3.2 अस्तेय

4.2.3.3 अस्वाद

4.2.3.4 अभय

4.2.4 सत्यवादी

4.2.5 दलित पीड़ित जनता के रक्षक

4.2.6 वर्णभेद के विरोधक

4.2.7 अध्ययनशील बापू

4.2.8 अथक कार्यशीलता

4.2.9 संस्कृति के रक्षक

4.2.10 आदर्शवादी

**निष्कर्ष**

**पाँचवा अध्याय - '' 'मुक्तियज्ञ' और 'विश्व-ज्योति बापू' की प्रासंगिकता''** **पृ. 142-180**

5.1 'मुक्तियज्ञ' काव्य की प्रासंगिकता

5.1.1 मानवता का प्रचार-प्रसार

5.1.1.1 सांप्रदायिक एकता में विखंडता

5.1.1.2 हिंसा की जगह अहिंसा

5.1.2 मानव सेवा का महत्त्व

5.1.2.1 अस्पृश्यता निवारण

5.1.2.2 चरखा संघ की स्थापना

5.1.3 राष्ट्रीय भावना

5.1.4 आदर्श जीवन का संदेश

5.1.5 किसानों की दयनीय अवस्था

5.2 'विश्व-ज्योति बापू' की प्रासंगिकता

5.2.1 मानवता का प्रचार-प्रसार

5.2.1.1 सांप्रदायिक एकता में विखंडता

5.2.1.2 अहिंसा के नाम पर हिंसा

5.2.2 मानव सेवा का महत्त्व

5.2.2.1 अस्पृश्यता निवारण

5.2.2.2 चरखा संघ की स्थापना

5.2.3 राष्ट्रीय भावना

5.2.4 आदर्श जीवन का प्रतीक

5.2.5 किसानों की दयनीय अवस्था

5.2.6 नैतिक मूल्यों की महत्ता

**निष्कर्ष**

**उपसंहार** **पृ. 181-191**

**संदर्भ ग्रंथ सूची** **पृ. 192-195**